काव्य की मुख्य विधा गीत

रामअवतार बैरवा

काव्य की शुरुआत गीत विधा से ही मानी जाती है । जो व्यक्ति तुकबंदी कर लिया करता था तो यह मान लिया जाता था कि वह कवि है । कहां भी गया है -

"वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान ।
उमड़कर आँखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान ।।"

इसमें भी "गान" को ही कविता का प्रमुख तत्व माना गया है।

गीता को भी गीता इसीलिए कहा गया है कि उसमें गीत की प्रधानता है। सारे प्राचीन और आध्यात्मिक ग्रंथ गीत विधा में ही रचित हैं। कालांतर में कविता की अनेक विधाएं काव्य जगत को समृद्ध करती चली गईं । वरिष्ठ गीतकार और आकाशवाणी के पूर्व निदेशक डॉ. रमानाथ अवस्थी ने ठीक ही कहा था - " कविता सबको किसी - न- किसी रूप में बहलाती रहती है। जिस कविता में यह प्रतीति होती है, उसी को कालजयी मानता हूँ । कविता कृष्ण की बांसुरी जैसी है, जिसमें दर्द और दिल बजता है। " अवस्थी जी ने चन्द शब्दों में कविता के सारे स्वरों, प्रकारों, चरणों और भावों को रेखांकित कर दिया। जिसने भी अवस्थी जी को पढ़ा है वो ये जानते हैं कि उनके गीत आधुनिकता और पारम्परिकता की देहरी पर खड़े होकर विरल करूणा, सौंदर्य और संघर्ष को जन्म देते दिखाई पड़ते हैं। कोई भी कविता अगर अपने तर्कशील विवेक से दुखी मनुष्य को संघर्ष के लिए तैयार करदे तो वह सफल मानी जाती है।

डॉ. बशीर बद्र ने यूं ही काव्य की सारी विधाओं को इलाहाबाद के संगम तट पर खड़ा नहीं कर दिया -

"ये गीत ग़ज़ल नज़्म अफसाने सब तेरे ही ग़म थे जिसको हमने,
कैसा कैसा नाम दिया है, कैसे - कैसे बांट लिया है।"

ग़म को किसी भी तरीके से कहा जाए, वह भावना और शिल्प के स्तर पर खरा होना चाहिए। अक्सर फिल्मों के लिए लिखने वालों पर असाहित्यिक होने का आरोप लगता रहा है। परन्तु अगर आपने साहित्य से हटकर समझौता नहीं किया तो आप हरिवंशराय बच्चन और गुलजार की तरह अपवाद भी हो सकते हैं। दोनों को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिल चुका है। अच्छे गीतों पर हर पाठक की निगाह होती है, चाहे वह किसी भी वर्ग के लिए लिखा जाए। संतोष आनंद जी ने जब भी, जो भी गीत लिखे, वो हमेशा साहित्य के आसपास रहे । उनमें महज तुकबंदी नहीं, जीवन का सार दिखाई देता है। एक प्यार का नगमा है या जिंदगी की ना टूटे लड़ी या फिर ये गलियां ये चौबारा, यहां आना ना दोबारा, जिस भी गीत को सुना जाए, उसमें जीवन और साहित्य की हकीकी नजर आती है। इनसे आज भी मेरी हर दूसरे , तीसरे दिन बात होती रहती है, अब इन्होंने भी हिन्दी गीत विधा को समाप्त प्राय मान लिया है। अमीर खुसरो, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, बच्चन, रामधारी सिंह दिनकर, महादेवी वर्मा, श्रीधर पाठक, शतदल, भारत भूषण से लेकर किशन सरोज और डॉ. राजेंद्र गौतम तक आते आते गीत और नवगीत की सारी नदियां सूख जाती हैं। "वो देखो कोहरे में चंदन वन डूब गया" किशन सरोज का ये गीत , हिन्दी गीत विधा का अंतिम गीत कहा जा सकता है। नवगीत का कंठ भी कुँवर नारायण, रामदरश मिश्र, नरेश सक्सेना, बुद्धिनाथ मिश्र, राजेन्द्र गौतम डॉ. ज्ञानेन्द्र दत्त और ओम निश्चल तक आते आते रुंध जाता है। कारणों से भी हम सब अच्छी तरह वाकिफ हैं। मंच के बहकावे ने लेखकों को ऐसे दोराहे पर ला खड़ा किया है कि गीत लिखने वाले न आगे जा सकते हैं, न पीछे लौट सकते हैं। रहा सहा उनका खेल ग़ज़ल ने बिगाड़ दिया। न वो गीत के रहे न ग़ज़ल के । बहुत से गीतकार बहुत बेहतरीन गीत लिख रहे थे, अचानक जाने कहां से ग़ज़ल का चस्का लग गया । उनका हाल भी काव्य बारादरी में हाइकू होकर रह गया। कब विधा आई और चली भी गई । कहां साहित्य अकादमी के संस्थापक सदस्यों में महादेवी वर्मा और दिनकर हिन्दी के दो नाम थे, आज ढूंढ़ने से भी नहीं मिलते हैं। हालांकि निराश होने की ज्यादा जरूरत भी नहीं है पहली बार डॉ. माधव कौशिक और डॉ. कुमुद शर्मा क्रमशः अध्यक्ष और उपाध्यक्ष बने हैं साहित्य अकादमी के । अगर गीतों में शब्दों का साहित्यिक तत्व, बिम्बों का सटीक प्रयोग और भावनाओं की हकीकी बरकरार रहती है तो निश्चित ही गीतों का भाग्य उज्जवल है।

ISSN:2583-8849